# ज्योतिषशास्त्र का प्रयोजन और उसकी उपयोगिता

**डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी**

**सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,**

**डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची**

श्रीकश्यप के मत से ग्रह-सङ्क्रान्ति-यज्ञ-व्रत-विवाह आदि कृत्यों के काल का निर्णय करना ज्योतिषशास्त्र का प्रयोजन है-

**ग्रहणग्रहसङ्क्रान्तियज्ञाध्ययनकर्मणाम्।**

**प्रयोजनं व्रतोद्वाहक्रियाणां कालनिर्णयः।।**

लगधाचार्य एवं महर्षि वसिष्ठ का कथन है कि ज्योतिषशास्त्र कालनिर्धारक शास्त्र है, जबकि महर्षि पाराशर आयुष्य एवं लोकयात्रा इसका मुख्य प्रयोजन मानते हैं। पाराशरहोराशास्त्र में मैत्रेयजी ने पाराशरमुनि से ज्योतिष का प्रयोजन बताते हुए कहा है-

**आयुश्च लोकयात्रा च द्वे शास्त्रेऽस्मिन् प्रयोजनम्।**

**निश्चेतुं को नु शक्नोति वसिष्ठो वा बृहस्पतिः।।**

**किं पुनर्मनुजास्तत्र विशेषात्तु कलौ युगे।।**

देवर्षि नारद ने श्रौत एवं स्मार्त कर्मों की सिद्धि हेतु ज्योतिष की रचना मानी है। वराहमिहिर का कहना है कि पूर्वजन्म में प्राणियों द्वारा जो शुभाशुभ कर्म किया गया है, उसको यह शास्त्र उसी प्रकार व्यक्त कर देता है, जिस प्रकार अन्धकार में अदृश्य पदार्थों को दीपक।बृहज्जातक के टीकाकार भट्टोत्पल इसकी व्याख्या करते हुए कहते हैं कि कुछ कर्म दृढमूलक होते हैं और कुछ शिथिलमुलक। दृढमूलक कर्मों का

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

फल अवश्य भोगना पड़ता है, जबकि शिथिलमूलक कर्मों का फल इस शास्त्र के द्वारा जानकर दान, जप, तप, हवन आदि के द्वारा निवारित किया जा सकता है-

**यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाशुभं तस्य कर्मणः पक्तिम्।**

**व्यञ्जयति शास्त्रमेतत् तमसि द्रव्याणि दीप इव।।**

उचित समय में आरम्भ कार्य व सम्यग् उपदिष्ट पर्वों में स्नान व्रतोपवासों से प्राप्त जो लोकवैभव है, उसका मात्र ज्योतिषशास्त्र कारण है-

**शुभलक्षणक्रियारम्भजनिताः पर्वसम्भवाः।**

**सम्पदस्सर्वलोकानां ज्योतिस्तत्र प्रयोजनम्।।**

भास्कराचार्य ने तो यहाँ तक कहा-यो ज्योतिषं वेद नरः स सम्यक् धर्मार्थमोक्षं लभते यशश्च। अर्थात् चतुर्विध पुरुषार्थ की प्राप्ति इसका प्रयोजन है। चतुर्विंशतिमतकार का कहना है कि गणित से समय की सिद्धि होती है ओर उस काल में देवता स्थित होते हैं। समय पर दी गई एक आहुति भी कल्याणप्रद होती है जबकि असमय में करोड़ों आहुतियाँ व्यर्थ हो जाती हैं। यदि दमय व्यतीत होने पर दान, होम, जप आदि किया जाए तो जैसे ऊसर में बीज व्यर्थ चला जाता है, वैसे ही असमय में किए गए दान, हवन, जप आदि व्यर्थ हो जाते हैं-

**गणितात्सिद्ध्यते कालः काले तिष्ठन्ति देवताः।**

**वरमेकाहुतिः काले नाकाले कोटिसम्मिताः।।**

**अतीतानागते काले दानमजपादिकम्।**

**ऊसरे वापितं बीजं तद्वद् भवति निष्फलम्।।**

यज्ञ, पढ़ना, ग्रहों का संक्रमण और सोलह संस्कारों के समय का निर्णय इस शास्त्र से होता है। यही इसके निर्माण का मुख्य प्रयोजन ज्ञात होता है क्योंकि काल का शुभाशुभ ही इसमें वर्णित है-

**यज्ञाध्ययनसङ्क्रान्तिग्रहषोडशकर्मणाम्।**

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

**प्रयोजनं च विज्ञेयं तत्तत्कालविनिर्णयम्।।**

**ज्योतिषशास्त्र की उपयोगिता-**

भारतीय ज्योतिषशास्त्र वेदाङ्ग के साथ-साथ जीवन पद्धति के रूप में भी माना जाता है। मनुष्य के जीवन में ज्योतिष की उपयोगिता पग-पग पर दिखलाई देती है। मनुष्य के समस्त कार्य ज्योतिष के द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। व्यवहार के लिए अत्यन्त उपयोगी दिन, सप्ताह, पक्ष, मास, अयन, ऋतु, वर्ष, एवं उत्सवतिथि आदि का परिज्ञान इसी शास्त्र से होता है। यदि मानव समाज को इसका ज्ञान न हो तो धार्मिक उत्सव, सामाजिक त्यौहार, महापुरुषों के जन्मदिन, अपनी प्राचीन गौरवगाथा का इतिहास प्रभृति किसी भी बात का ठीक-ठीक पता न लग सकेगा और न कोई उचित कृत्य ही यथासमय सम्पन्न किया जा सकेगा।

नारद के अनुसार ब्रह्माजी ने इस शास्त्र की रचना इसीलिए की कि समग्र श्रौतस्मार्त कर्म का सम्पादन जगज्जन सविधि करने में सक्षम हो सके और उनका सब प्रकार से कल्याण हो-

**विनैतदखिलं श्रौतस्मार्तं कर्म न सिद्ध्यति।**

**तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा रचितं पुरा।।**

आर्षप्रज्ञामण्डित तपःपूत साधकों का कहना है कि जिस प्रकार मनुष्य को नेत्र के अभाव में लोक का कोई भी दृश्य दिखायी नहीं देता, उसी प्रकार ज्योतिषज्ञान के अभाव में यज्ञादि काल-निर्धारण, बहुविध संस्कार, विद्यामुहूर्त, व्रत-त्योहार, वास्तु, मूर्तिप्रतिष्ठा, सामुद्रिकशास्त्र, अङ्गविद्या, स्वप्नविचार, शकुनापशकुन, विवाह, उपनयन, चौलकर्म, पुरुष-स्त्री-लक्षणबोध, रेखादिफल और स्वरविद्याप्रभृति किसी भी प्रकार के कार्य और उसके मुहूर्त का सम्यग्रूपेण परिज्ञान नहीं हो सकता है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

सृष्टि के रहस्य का पता भी ज्योतिष से चलता है। प्राचीनकाल से ही भारतवर्ष में सृष्टि के रहस्य की छान-बीन करने के लिए ज्योतिषशास्त्र का उपयोग किया जा रहा है। इसी कारण सिद्धान्त ज्योतिष के ग्रन्थों में सृष्टि का विवेचन अवश्य रहता है।

यह वह शास्त्र है, जिसके आधार पर मनुष्य को उसके जन्म-जन्मान्तरीय कर्मों के सुपरिणाम और दुष्परिणाम का ज्ञान होता है तथा दुष्परिणामों से बचाव हेतु उपायों का निर्देश किया जाता है। विद्वानों ने इसे प्रत्यक्ष शास्त्र के रूप में स्वीकार किया है-

**अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।**

**प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ।।**

महर्षि गर्ग के अनुसार सम्पूर्ण लोकों के शुभाशुभ का ज्ञान ज्यौतिषशास्त्र में निहित है, इस ज्ञान को जानने वाला मनुष्य परमोच्च लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करता है-

**ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।**

**ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमां गतिम्।।**

**न च साम्वत्सरपाठी नरके परिपच्यते।**

**ब्रह्मलोके प्रतिष्ठां च लभते दैवचिन्तकः।।**

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति ज्योतिष के द्वारा जितनी सुलभ है, उतनी अन्य शास्त्र से नहीं। अर्थप्राप्ति तो इसके श्रीगणेश से ही देखने में आती है। स्वार्थरहित शुभ मुहूर्त में यज्ञादि कार्यारम्भ कराना एवं अशुभ ग्रह की शान्त्यादि बतलाकर मानव की सेवा करना यह परोपकाररूप सर्वश्रेष्ठ धर्म है। ज्योतिष के फलादेश से ख्याति होती है और उससे काम (अभिलाषा) एवं शास्त्र के तत्त्वज्ञान से मोक्ष होता है। विषयी, जिज्ञासु और मुमुक्षु प्राणियों में अर्थ की प्राप्ति से विषयी, प्रत्यक्ष प्रमाण से जिज्ञासु और

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

आध्यात्मिक दृष्टि से मुमुक्षु अपनी-अपनी अभीष्ट सिद्धि पाकर प्रसन्न होते हैं।इस कारण यह शास्त्र सर्वोपयोगी है।

ज्योतिष ईश्वरीय ज्ञान है। ज्योतिष की उपयोगिता व्यक्ति के माता के गर्भ में आने से लेकर अन्तिम समयतक है। उसके आधार पर किसी भी व्यक्ति की समस्यायों का समाधान होता है।

ज्योतिष विज्ञानसम्मत शास्त्र है। यह शुभ नक्षत्र, शुभ तिथि, शुभ वार और शुभ योग का परिज्ञान कराते हुए व्यक्ति को उसके भले के लिए पंचांगों में सुकर्म करने के लिए उत्प्रेरित करता है

वस्तुतः भूत, वर्तमान और भविष्यत-तीनों कालों के प्रत्यक्षीकरण में यह विद्या चक्षुरूपात्मिका है। एतावता इसका प्राधान्य स्वयंसिद्ध है तथा होरा, संहिता और सिद्धान्तादि स्कन्धत्रयात्मकत्वात् इसकी व्यापकता विद्वज्जनसमुदाय में सर्वविदित है। विपश्चिज्जनसमूह का मानना है कि गणित एक प्रामाणिक ज्ञानशाखा है, जो ज्योतिषशास्त्र का ही एक अङ्ग है, चाहे वह अङ्कगणित हो, रेखागणित हो अथवा बीजगणित, सभी का समावेश इसी के अन्तर्गत होता है। इसकी व्यापकता और लोकप्रियता इसी से प्रमाणित है कि इसके सिद्धान्तों का उल्लेख वेदों, ब्राह्मणग्रन्थों, रामायण, महाभारत, काव्यों एवं अन्य ग्रन्थों में भी प्राप्त होता है तथा इसका सम्बन्ध खगोल, भूगोल, मनोविज्ञान, प्राणिशास्त्र, वनस्पतिविज्ञान, जीवनविज्ञान, समाजशास्त्र, शरीरविज्ञान, आयुर्वेद, वास्तु, सैन्यशास्त्र एवं लोकजीवन आदि सभी के साथ है।

ज्योतिषविद्या अभीष्ट सिद्धि हेतु सत्कर्म की सम्यक् सुबोधिका एवं उत्प्रेरिका है। इस विद्या की उपयोगिता ज्ञान और विज्ञान तथा व्यवहार और अध्यात्म सभी क्षेत्रों में सिद्ध हो चुकी है। मौसम की जानकारी का प्रमुख आधार ज्योतिष ही है। वर्षा की सम्भावनाएं, बीजवपन, कूपखनन, गृहनिर्माण, जनन-प्रजनन, उत्सव-महोत्सव-आयोजन, विद्याप्राप्ति, जय-विजय, यज्ञ-अनुष्ठान एवमेव व्यक्ति के जन्म से

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

लेकर मृत्युपर्यन्त सभी कार्यों के शुचिपूर्ण एवं शोभन सम्पादन के लिए ज्योतिष परम सहायक बनकर मार्गदर्शन कराता है।

मनुष्य के आज भी समस्त कार्य ज्योतिष के द्वारा ही चलते हैं। व्यवहार के लिए अत्यन्त उपयोगी दिन, सप्ताह, पक्ष, मास, अयन, ऋतु, वर्ष एवं उत्सव, तिथि आदि का परिज्ञान इसी शास्त्र से होता है।

ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता ही यज्ञों का यथार्थ ज्ञाता है-

**वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः।**

**तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्यौतिषं वेद स वेद यज्ञम्।।**

अर्थात् वेदों का प्रवर्तन यज्ञों के सम्यक् सम्पादन के लिए हुआ। वे यज्ञ भी काल के सम्यक् ज्ञान होने पर ही यथाविधि सम्पन्न होते हैं। अतः जो ज्योतिष को मानता है, वह सब कुछ जानता है।

जीवन से सम्बन्धित सत्य का विश्लेषण ज्योतिषशास्त्र कराता है। ज्योतिष हमारे जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त समस्त कार्यकलापों का हस्तामलक दर्शन कराता है। कहा भी गया है-

**कालज्ञानं ग्रहाधीनं ग्रहाः कर्मफलप्रदाः।**

**सृष्टिरक्षणसंहाराः सर्वे चापि ग्रहानुगाः।।**

भारतीय संस्कृति मानव को सही मानव बनाने की निर्देशिका है। ऋग्वेद स्वयं कहता है कि मनुर्भव अर्थात् हे मनुष्यों सही मानव बनो। मनुष्य को सही मानव बनाने के लिए गृह्यसूत्रों में नियम एवं विधि-विधान से सोलह संस्कारों की सम्यक् विवेचना है। ज्योतिषशास्त्र इन संस्कारों के सम्पादन में प्रमुख और महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सोलह संस्कारों में सबसे महत्त्वपूर्ण गर्भाधान संस्कार हे। ज्योतिष कहता है कि गर्भाधान शुभ मुहुर्त एवं शोभनकाल या शुभ समय में ही करणीय है। शोभन समय ज्योतिष के आधार पर

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

ही ज्ञातव्य है। अच्छे समय में किया गया आधान जातक के जन्म-संस्कार को शोभन बनाता है। अच्छे या बुरे ग्रह निजस्वरूपानुसात जातक के स्वरूप पर अवश्य प्रकाशन डालते हैं-

**एते ग्रहाः बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्तिसमम्।**

**कुर्युर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम्।।**

देवी कैकसी और महर्षि विश्रवा का अमय में सहवासकार्य इसका उल्लेखनीय उदाहरण है। इस प्रकार महर्षि कश्यप और दिति का असामयिक सम्मिलन दैत्य सन्तति के प्रभव का कारण बना। अतः श्रेष्ठ सन्तति प्राप्ति हेतु गर्भाधान के समय संस्कार विषयक मुहूर्त का विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। स्पष्ट है कि जब सब कुछ ग्रहादि के अधीन है तो हम अच्छे ग्रह-नक्षत्र का परिज्ञान कर गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त समस्त कार्यों को शुभ समय में करना चाहिए, तभी व्यक्ति मनस्विता, तपस्विता, ओजस्विता और यशस्विता से सम्पन्न होकर अपना मानवजीवन धन्य बनाता है।

ज्योतिषशास्त्र जीव-जन्मान्तरों का प्रत्यक्ष दर्पण है। व्यक्ति श्रेष्ठ और उत्कृष्ट लोक एवं यशस्वी योनि को प्राप्त करे, इस हेतु ज्योतिषविद्या हमें आगाह भी करती है और उच्चस्थ ग्रहयोग में सत्कार्य करने के लिए उत्प्रेरित भी करती है। ज्योतिष ज्ञाननेत्र है, जो हमें दिखा देता है कि अमुक करणीय कर्म है और अमुक अकरणीय। यह जीवन से सम्बद्ध सत्यासत्य का सुबोध कराता है। विवेकी पुरुष ज्योतिषज्ञान से करणीय ही ग्रहण करते हैं।

ज्योतिषी का लक्षण प्रतिपादित करते हुए बृहत्संहिता में कहा गया है कि नवीन, देखने में प्रिय, नम्र, सत्यवादी, दूसरे के गुणों में दोष नहीं निकालने वाला, राग-द्वेष से रहित, दृढ़ और पुष्ट शारीरिक सन्धि वाला, सर्वाङ्गपूर्ण, श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त हाथ, पैर, नाखून, आँख, ठोढी, दाँत, कान, मस्तक और शिर वाला, सुन्दर तथा बोलने में गम्भीर और उदात्त ज्योतिषी होना चाहिए क्योंकि शरीर की आकृति के अनुरूप गुण-दोष होते हैं-

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

**तत्र सांवत्सरोऽभिजातः प्रियदर्शनो विनीतवेषः सत्यवागनसूयकः समः सुसंहितोपचितगात्रसन्धिरविकलश्चारुकरचरणनखनयनचिबुकदशनश्रवणललाटभ्रूत्तमाङ्गो वपुष्मान् गम्भीरोदात्तघोषः। प्रायः शरीराकारानुवर्तिनो हि गुणा दोषाश्च भवन्ति।**

विशेषज्ञ ज्योतिषी की प्रशंसा करते हुए कहा गया है कि सब प्रकार से कुशल, होराशास्त्र और गणित में प्रवीण ज्यौतिषी की पूजा जो राजा नहीं करता है वह नाश को प्राप्त करता है-

**कृत्स्नाङ्गोपाङ्गकुशलं होरागणितनैष्ठिकम्।**

**यो न पूजयते राजा स नाशमुपगच्छति।।**

अत्रि मुनि का कहना है कि शान्तचित्त, नम्रता से युक्त, विशुद्ध अन्तःकरण वाला, देवता और ब्राह्मणों की पूजा करने वाला, पराई निन्दा से पृथक्, वेद पढ़ने वाला, इन्द्रिय को वश में करने वाला, देव पूजा में लीन, स्वरशास्त्र में निपुण, सिद्धान्त और संहिता का जानकार, जातकशास्त्र में परिपूर्ण, प्रश्न एवं शकुन शास्त्र का ज्ञाता, प्रसिद्ध गणक या ज्योतिषी या दैवज्ञ कहते हैं-

**शान्तो विनीतः शुद्धात्मा देवब्राह्मणपूजकः।**

**विमुखः परनिन्दासु वेदपाठी जितेन्द्रियः।।**

**देवताराधनासक्तः स्वरशास्त्रविशारदः।**

**सिद्धान्तसंहितावेत्ता जातके च कृतश्रमः।।**

**प्रश्नज्ञः शकुनज्ञश्च प्रशस्तो गणकः स्मृतः।**

**प्रमाणं वचनं तस्य भवत्येव न संशयः।।**

कौमुदी में कहा गया है कि व्यक्त शरीरावयव वाला, फल समय का वेत्ता, पुण्यवान्, आगे-पीछे का ख्याल रखने वाला, पाटी, कुट्टक एवं बीजगणितशास्त्र में निपुण, सिद्धान्त ज्योतिष को जानने वाला, भिन्न,

अभिन्न, सवर्णन, गुणन में बार-बार बड़ा उद्योगी, धीकोट्यादि ग्रन्थों के रहस्य को जानने वाला विद्वत्समाज में प्रशंसा करने के योग्य होता है-

**व्यक्ताङ्गं फलकालवित्सुकृतवान् पूर्वापरस्मारकः**

**पाटीकुट्टकबीजशास्त्रकुशलः सिद्धान्तवित्प्राञ्जलिः।**

**भिन्नाभिन्नसवर्णनानुगुणने भूयो महानुद्यमी**

**धीकोट्यादिरहस्यवित्स गणकः श्लाघ्यो विदां संसदि।।**

शास्त्रहीन, दरिद्री, लोभी, दूषित वस्त्रधारी, कठोर, धूर्त, कोढ़ी, बहिरा, अन्धा, लंगड़ा, बुरा बोलने वाला, कुटुम्बियों का विरोधी, बगुला की वृत्ति वाला, अच्छे आचरण से हीन यदि दैवज्ञत्व का अभिमान करता हो तो उससे कहीं भी कुछ नहीं पूछना चाहिए क्योंकि इन दोषों से युक्त होने के नाते व दैवज्ञ नहीं होता है-

**विश्रुतो विधनो लुब्धः कुचैलः कर्कशः शठः।**

**कुष्ठी च बधिरश्चान्धः पङ्गुर्निष्ठुरभाषकः।।**

**बन्धुद्विट् वकवृत्तिश्च सदाचारविवर्जितः।**

**कृतादेशो न सर्वत्र प्रष्टव्यो नैव दैववित्।।**

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi